विचार बिन्दु

मूर्ति के समान मनुष्य का जीवन सभी ओर से सुन्दर होना चाहिए। –सुकरात

वन और मानव स्वास्थ्य

हरियाली, प्राकृतिक वातावरण, वनों और उपवनों में प्रकृति-अनुभव या दीर्घकालिक जुड़ाव का प्रसन्नता में योगदान पर पूर्व में यहाँ प्रमाण-आधारित ठोस विश्लेषण प्रस्तुत किया गया था। परन्तु क्या यह हरियाली में किया गया व्यायाम और योग तुलनात्मक रूप से बेहतर स्वास्थ्य भी प्रदान करता है? वर्ष 2021 में प्रकाशित शोध को समाहित हर आज की चर्चा पुनः इसी विषय पर है।

जैसा कि पूर्व में बताया गया था, संहिताओं में स्वास्थ्य-रक्षण और रोगोपचार दोनों के लिये ऐसे अनेक सन्दर्भ हैं (देखें, च.चि.3.260-266; च.चि.2/3, 26-30, च.चि.4.106-109; च.वि.6.17, सु.उ.47.55-57 आदि)। उक्त सभी सन्दर्भ केवल उदाहरणार्थ और प्राचीनता दर्शित करने के उद्देश्य से उद्धृत किये गये हैं। समकालीन शोध में पिछले कई दशकों से विभिन्न विषयों के विद्वानों ने अपनी विधा के अनुसार इस बात की ओर ध्यान खींचा है कि प्रकृति से जुड़ने और मानव स्वास्थ्य में सुधार के बीच सकारात्मक संबंध है। यह आम समझ की बात है कि प्रकृति और पर्यावरण के सानिध्य में समय बिताना हमारे लिये स्वाभाविक रूप से अच्छा हो सकता है। प्राचीन सभ्यताओं के अवशेषों, प्राचीनकाल से चली आ रही सांस्कृतिक परम्पराओं और चिकित्सा पद्धतियों में इस बात के प्रमाण मिलते हैं कि मानव सभ्यता का अपने स्वास्थ्य, चिकित्सा और आध्यात्मिकता के लिये प्रकृति के साथ अन्योन्याश्रित जुड़ाव रहा है।

जहाँ तक हरियाली का शारीरिक और मनोरोगों को रोकने में योगदान है उस पर बहुत शोध है और उसका सम्पूर्ण विश्लेषण यहाँ देना संभव नहीं है। इस विषय में एक बेहद उपयोगी पुस्तक द एक्सपीरियंस ऑफ़ नेचर- अ साइकोलॉजिकल पर्सपेक्टिव वर्ष 1989 में प्रकाशित हुई थी। राचेल कपलान और स्टेफेन कपलान की यह पुस्तक इस विषय में विश्व की सर्वाधिक संदर्भित पुस्तक है जिसे लगभग 8000 प्रकाशनों में संदर्भित किया गया है। प्राकृतिक वातावरण, लोगों और उनके बीच के संबंधों काएक प्रमाण-आधारित लेखा-जोखा इस पुस्तक में है। लेखकों ने यह समझने की कोशिश की है कि लोग प्रकृति का अनुभव कैसे करते हैं और वे किस प्रकार के प्राकृतिक वातावरण पसंद करते हैं, वे जंगल के अनुभवों से क्या मनोवैज्ञानिक लाभ उठाते हैं, और हमारे आसपास के उद्यान लोगों के लिये क्यों महत्वपूर्ण हैं।

आयुर्वेद का लोक-पुरुष-साम्य सिद्धांत यह स्पष्ट करता है कि मानव और संसार एक समान हैं (च.शा.5.3: पुरुषोऽयं लोकसम्मितः) इस सिद्धांत के प्रकाश में देखने पर लोक या पृथ्वी के वातावरण का सीधा सीधा प्रभाव मानव के स्वास्थ्य पर पड़ता है क्योंकि लोक और पुरुष में समानता (च.शा.5.3: लोकपुरुषयोः सामान्यम्) होने से सामान्य-विशेष का सिद्धांत कार्य करता है। अर्थात सामान भावों को सामान भावों से मिलाने पर उस भाव की वृद्धि और असमान भावों को मिलाने पर ह्रास होता है। सत्य बुद्धि तभी प्रकट होती है या अकल तभी आती है जब स्वयं के अंदर प्रकृति को व प्रकृति के अंदर स्वयं को देखा जाये (च.शा.5.7): सर्वलोकमात्मन्यात्मानं च सर्वलोके सममनुपश्यतः सत्या बुद्धिः समुत्पद्यते। यहाँ पर लोक से तात्पर्य पूरी दुनिया के वातावरण से है जिसमें छः धातुयें पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश तथा आत्मा शामिल हैं (च.शा.5.7): षड्धातुसमुदायो हि सामान्यतः सर्वलोकः। इस सूची में आत्मा का शामिल होना आश्चर्यजनक नहीं मानना चाहिये क्योंकि पौधे, प्राणी और सम्पूर्ण जीवन भी लोक में शामिल है।

यहाँ यह बताना आवश्यक है कि ऐसा नहीं है कि प्रकृति के सभी आयाम स्वास्थ्यवर्धक और सुरक्षित ही हों। कई प्राकृतिक स्थल मानव में अकेले डर पैदा कर सकते हैं। जो हवा, पानी और मिट्टी स्वास्थ्य के लिये सर्वथा उपयुक्त होती है, वही प्रदूषित होने या प्राकृतिक आपदाओं के स्वरुप में आने पर स्वास्थ्य के लिये हानिकारक हो सकती हैं। प्राकृतिक वातावरण के जो प्राणी बहुत सुन्दर लगते हैं उनमें से बहुत हिंसक भी हो सकते हैं। इन बातों को ध्यान में रखते हुये प्रकृति-अनुभव अपने अन्य रूपों में हमारे स्वास्थ्य की स्थिति को निर्धारित करते हैं। इस दृष्टिकोण से प्रकृति और पर्यावरण को निहारना, प्राकृतिक वातावरण में घूमना-फिरना स्वास्थ्यकर होता है।

प्रकृति-अनुभव किन कारणों से हमारे स्वास्थ्य पर प्रभाव डालता है? या अन्य शब्दों में कहें तो प्रकृति से जुड़ाव के स्वास्थ्यकर होने की मैकेनिज्म ऑफ़ एक्शन क्या है? अनेक अध्ययनों के प्रमाण स्पष्ट करते हैं कि प्रकृति का मानव शरीर और मन पर स्वास्थ्यकर प्रभाव स्वास्थ्य के विविध आयामों को बेहतर करने में प्राकृतिक वातावरणों की भूमिका के कारण होता है। उदाहरण के लिये प्रकृति-अनुभव से स्वास्थ्य में सुधार की मैकेनिज्म ऑफ़ एक्शन को मानसिक तनाव, चिंता और अवसाद में कमी, मन की प्रसन्नता में बढ़ोत्तरी, अच्छी निद्रा, मनोहारी अनुभूति, दर्द-नियंत्रण, बेहतर सामाजिक संपर्क, व्यायाम में बढ़ोत्तरी, हृदय रोगों में कमी, प्रतिरक्षा तंत्र में सुधार आदि के प्रकाश में देखा जा सकता है।

यह आम समझ की बात है कि प्रकृति और पर्यावरण के सानिध्य में समय बिताना हमारे लिये स्वाभाविक रूप से अच्छा हो सकता है। प्राचीन सभ्यताओं के अवशेषों, प्राचीनकाल से चली आ रही सांस्कृतिक परम्पराओं और चिकित्सा पद्धतियों में इस बात के प्रमाण मिलते हैं कि मानव सभ्यता का अपने स्वास्थ्य, चिकित्सा और आध्यात्मिकता के लिये प्रकृति के साथ अन्योन्याश्रित जुड़ाव रहा है।

शहरों में हरियाली से स्वास्थ्य लाभ के बारे में वर्ष 1800 के बाद से कई छिटपुट अध्ययन मिलते हैं और शहरी विकास में इन्हें शामिल करने के प्रयास भी दुनिया भर में हुये है। इन सब अध्ययनों में एक सन्देश मिल रहा था कि हरियाली को अनुभूत करना या हरियाली का एक्सपोज़र स्वास्थ्य के लिये लाभकारी है, परन्तु व्यवस्थित समीक्षा और मेटा-एनालिसिस अब आना शुरू हुये हैं। हाल ही में हरियाली से मिलाने वाले लगभग 100 प्रकार के स्वास्थ्य-लाभ के निष्कर्षों वाले 143 अध्ययनों को शामिल कर एक मेटा-एनालिसिस की गयी। इससे कई रोचक परिणाम मिले। जैसे जैसे हरियाली के साथ जुड़ाव बढ़ा वैसे वैसे लार के कोर्टिसोल, हृदय गति, व डायस्टोलिक रक्तचाप में कमी पायी गयी। एचडीएल कोलेस्ट्रॉल व हृदय गति की परिवर्तनशीलता में बेहतरी हुई। समय-पूर्व प्रसव-जोखिम, मधुमेह, तथा समस्त-कारण मृत्यु दर (आल-कॉज मोर्टेलिटी) और हृदय रोग मृत्यु दर में भी कमी पाई गयी। स्ट्रोक, उच्च रक्तचाप, डिस्लिपीडेमिया, अस्थमा, और कोरोनरी हृदय रोग की घटनाओं में भी कमी होती गयी। अलग अलग अध्ययनों को देखने पर यह भी स्पष्ट हुआ कि स्वास्थ्य परिणामों में 66.7 प्रतिशत से 100 प्रतिशत तक बेहतरी हुई है। इनमें न्यूरोलॉजिकल, कैंसर, व श्वसन रोगों से मृत्यु दर में कमी भी पाई गयी (देखें, सी. टोहिग-बेनेट, ए. जोन्स, एनवायर्नमेंटल रिसर्च, 166: 628-637, 2018)।

इस विषय में सबसे भारी अध्ययन जिसका वित्त-पोषण विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा किया गया था, वह वर्ष 2019 में दुनिया के एक अगुआ जर्नल में प्रकाशित हुई। हरियाली को स्वास्थ्य-निर्धारक, स्वास्थ्य में सुधार, और विभिन्न प्रसन्नता के लिये उपयोगी माना जाता रहा है। इस व्यवस्थित अध्ययन में विश्व भर के अनुदैर्ध्य अध्ययनों से प्राप्त प्रमाणों की इस बात के लिये समीक्षा की गयी कि हरियाली, पार्क्स, गार्डन्स आदि की उपलब्धता का सकल मृत्यु दर में प्रभाव क्या है। इस मेटा-एनालिसिस में प्रारम्भ में 9298 अध्ययन और 13 अन्य अध्ययनों की पहचान की गयी। इनमें से 9234 (99 प्रतिशत) अध्ययनों को शीर्षक और सारांश जांचने के बाद अपग करते हुये शेष 77 अध्ययनों में से 68 (88 प्रतिशत) को सम्मिलित किया गया। उक्त के साथ ही मात्रात्मक मूल्यांकन हेतु नौ (12 प्रतिशत) अध्ययनों को शामिल किया। इनमें सात देशों के 8.32 लाख व्यक्ति शामिल थे। कुल मिलाकर निष्कर्ष स्पष्ट करते हैं कि आसपास की हरियाली और सकल-कारण मृत्यु दर के बीच एक व्युत्क्रम रिश्ते का प्रमाण पाया गया। कहने का तात्पर्य यह कि जैसे-जैसे हरियाली की उपस्थिति बढ़ती जाती है वैसे-वैसे सभी कारणों से मृत्यु दर में कमी आती जाती है। सन्देश यह है कि मानव समाज जहाँ रहता और काम करता है वहां हरियाली बढ़ाने और जैव-विविधता संरक्षण को बढ़ावा देना मानव स्वास्थ्य के लिये बहुत उपयोगी है (देखें, डी. रोजस रुएडा आदि, द लैंसेट प्लेनेटरी हेल्थ, 3,11:ई469-ई477,2019)।

एक अन्य महत्वपूर्ण मेटा-एनालिसिस में बहुत महत्वपूर्ण प्रश्न पर जांच की गयी कि गर्भावस्था में प्रतिकूल परिणामों पर आवासीय हरियाली का क्या प्रभाव रहता है। इसमें कुल 36 अध्ययन शामिल थे और कुल मिलाकर1.19 करोड़(11.9 मिलियन) प्रतिभागी थे। परिणाम स्पष्ट करते हैं कि हरियाली वाले स्थलों में जन्म के समय न्यूनतम वजन का जोखिम उच्च स्तर की हरियाली वाले समूह में काफी कम था। गर्भावधि उम्र कम रहने की संभावना भी उच्च हरियाली वाले क्षेत्रों में घटी पायी गयी। इसके अलावा अधिक हरियाली वाले क्षेत्रों में मातृ-जोखिम कम पाया गया और मानसिक विकारों में भी कमी पायी गयी। यह समीक्षा आवासीय हरियाली और गर्भावस्था के प्रतिकूल परिणामों के बीच एक उलटे रिश्ता होने की पुष्टि करती है। अध्ययन के निष्कर्ष स्पष्ट कर देते हैं कि हरियाली गर्भवती महिलाओं के लिये जोखिम घटाती है (वाइ. झान आदि, साइंस ऑफ़ द टोटल एनवायरनमेंट, 718: आर्ट. 137420, 2020)।

हमारा समाज आज शहरीकरण, संसाधन-विदोहन और जीवनशैली में बदलाव के कारण प्रकृति-उन्मुखता से प्रकृति-विमुखता की ओर जा रहा है। इंसान और प्राकृतिक पर्यावरण के आपसी संपर्क की संभावनायें बहुत कम होती जा रहें हैं। संहिताओं, शोध और अनुभव की त्रिवेणी से उत्पन्न ज्ञान इस बात के पुख्ता प्रमाण दर्शित करता है कि प्रकृति-अनुभव मानव स्वास्थ्य के लिये अनिवार्य है। यह रिश्ता क्यों है, इस पर हुई शोध स्पष्ट करती है कि प्रकृति-अनुभव से स्वास्थ्य-लाभ के मूल में वायु गुणवत्ता, शारीरिक गतिविधि और व्यायाम, सामाजिक सामंजस्य और तनाव में कमी आदि कारक हैं।

इस तमाम चर्चा का मूल संदेश यह है कि पर्यावरण के साथ हमारे संबंध हमारे शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य में सुधार करते हैं। प्रकृति-अनुभव अनेक रूपों में हो सकता है। हमारे आसपास हरियाली को बढ़ावा देना, वनों उपवनों में घूमना, प्राकृतिक स्थलों में सैर-सपाटा, प्रतिदिन समीपवर्ती बाग-बगीचों में जाकर कम से कम दो घंटे का समय बिताना, कार्य-स्थलों में हरियाली बढाने के लिये छोटे-छोटे गार्डन या बगीची विकसित करना, बैठने के स्थान में खिड़की से दिखने वाला हरा-भरा दृश्य, कार्यालय में पांच मिनट का ब्रेक लेकर हरियाली में टहल कर आना आदिसब छोटे-छोटे ऐसे कार्य हैं, जिनके माध्यम से हमारा प्रकृति के साथ जुड़ाव बना रहता है। इन सबमें सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह याद रखने योग्य है कि चूंकि प्रतिदिन व्यायाम और योग करना स्वास्थ्य के लिये आवश्यक है अतः व्यायाम और योग हरे-भरे स्थल, बाग-बगीचों, नदी या झील के समीप किया जाये तो शारीरिक मानसिक स्वास्थ्य के लिये अधिक उपयोगी है। बच्चों को भी प्रकृति-अनुभव कराइये। हरियाली से जुड़ाव बच्चों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए परम आवश्यक है। जीवन के प्रारम्भिक काल में प्रकृति से जुड़ाव मानव और प्रकृति के मध्य आजीवन सार्थक रिश्ता बनाने हेतु आवश्यक है। प्रकृति के साथ जुड़े रहिये। योग और व्यायाम कीजिये। आनंदित रहिये। स्वस्थ रहिये।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(इंडियन फारेस्ट सर्विस में वरिष्ठ अधिकारी)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं।)

75 साल बाद भी दर-दर की ठोकरें खा रहे नारायणपुर के गाड़िया लुहार

नारायणपुर, (निसं)। हल्दी घाटी के युद्ध के बाद महाराणा प्रताप के साथ अपना घर बार छोड़ने वाले गाडिया लुहारों की हालत 500 साल बाद भी बदतर बनी हुई है। आज भी इन परिवारों के पास रहने को घर नहीं है और न ही कमाने खाने के लिए रोजगार का कोई साधन। देश को आजादी मिले भी 75 साल हो गए लेकिन आज तक किसी सरकार ने इन गाड़िया लुहारों की सुध नहीं ली है।

राज्य सरकार द्वारा गाड़िया लुहारों सहित अन्य घुमन्तु जातियों को एक स्थान पर स्थायी रूप से बसाने एवं इनको समाज की मुख्यधारा से जोडने के लिए विभिन्न योजनाएं लागू की गई थी। जैसे समस्त घुमन्तु जातियों को बिना किसी सर्वे के बीपीएल की श्रेणी में मानना। स्थायी आवास के लिए निःशुल्क भूमि का आवंटन किया जाना तथा महाराणा प्रताप आवास योजना के अंतर्गत आवंटित भूमि पर पक्के मकान बनाने के लिए अनुदान राशि स्वीकृत करना लेकिन संबंधित विभागों की उदासीनता के चलते घुमन्तु जातियों के कल्याण के लिए अनेकों योजनाओं के होने के बावजूद घुमन्तु जाति के परिवारों को इन योजनाओं का लाभ नहीं मिल पा रहा है। गाड़िया लुहार इन्द्रा देवी ने बताया कि नारायणपुर और आस-पास में गाडियां लुहारों के लगभग 50 परिवार अस्थाई रूप से रहते हैं। जमीन के अभाव में ये लोग तंबुओं में कष्ट भरा जीवन जी रहे हैं। सबसे ज्यादा परेशानी की बात है रोटी की चिंता यानी कमाने की। आधुनिकता के चलते इनके बनाये औजार अब मशीनों से मुकाबला कर पाने में नाकाम हैं। जिसके कारण लुहारों के सामने परिवार पालने भर की कमाई नहीं हो पाती है। ज्यादतर परिवार सरकार की योजनाओं से बेखबर हैं। इस कारण वह सरकारी योजनाओं का लाभ ही नहीं उठा पाते। यह कहानी केवल नारायणपुर के आस-पास की ही नहीं बल्कि पूरे प्रदेश के घुमन्तु गाडिया लुहारों की है। अब सवाल यह है कि क्या प्रशासन की यह जिम्मेदारी नहीं कि वो इनको योजनाओं की जानकारी दे और इनके पुनर्वास में सहयोग करे।

आजीविका के लिए तम्बू लगाकर संघर्ष कर रहें गाड़िया लुहार परिवार।

- **नारायणपुर और आस-पास में गाडियां लुहारों के लगभग 50 परिवार तंबुओं में जीवन जी रहे हैं।**
- **सरकारी योजनाओं का लाभ नहीं मिल पा रहा**

तिरंगा लेकर निकले 2हजार स्कूली बच्चे

अलवर के एक निजी स्कूल के बच्चों ने तिरंगा रैली निकाली ।

अलवर, (निसं)। आजादी के 75वें वर्ष को अमृत महोत्सव के रूप में मनाया जा रहा है। शनिवार को अलवर शहर में ओसवाल जैन सीनयर सैकेंडरी स्कूल के करीब 2 हजार बच्चे हाथों में तिरंगा लेकर शहर की सड़कों पर निलके। बच्चे एक सुर में वंदेमातरम और देश के शहीदों के जयकारे लगाते गए। नेहरू गार्डन में चंद्रशेखर आजाद की प्रतिमा तक पहुंचे। वहां चंद्रशेखर आजाद की प्रतिमा पर पुष्प बरसाए।

स्कूल के प्रिंसिपल विनोद शर्मा ने बताया कि इस रैली में करीब 2 हजार बच्चों ने भाग लिया। सरकार ने डाक विभाग के जरिए आमजन को तिरंगा उपलब्ध कराने का इंतजाम किया है। वहां से केवल 25 रुपए में तिरंगा ले जा सकते हैं। इस बार 13 से 15 अगस्त तक हर घर तिरंगा फहराने का अभियान है। अभी इसे अमृत महोत्सव की तैयारी हर तरफ नजर आने लगी हैं। डाक विभाग से अब तक 6 हजार से अधिक तिरंगा लोग लेकर जा चुके हैं।

- **चंद्रशेखर आजाद की प्रतिमा पर बरसाए फूल**

28वां शान्ति वृक्ष मेहरानगढ़ में रोपा

जोधपुर, (कासं)। जोधपुर के ऐतिहासिक मेहरानगढ दुर्ग में 28वां 'ट्री ऑफ पीस' (शान्ति वृक्ष) रोपण पूर्व शासक गज सिंह, हेमलता राज्ये, स्लोवक एम्बेसडर रोबर्ट मॅक्सिएन, जाना मॅक्सिएनोवा, अचलानन्द गिरी महाराज, डॉ मारेक सोबोला ने किया। इसी के साथ भारत 17वां देश इस सूची में शामिल हो गया है जहीं यह वृक्षारोपण किया गया।

उल्लेखनीय है कि यह पहल स्लोवक गणतंत्र के एन जी ओ सरवरे एट मनेरे ने शुरू की ताकि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर शान्ति, सदभावना एवं प्रकृति संरक्षण का सन्देश पहुंचे। इस प्रोजेक्ट की शुरुआत 2018 में हुई तथा अभी तक 16 देशों में 27 शान्ति वृक्ष रोपण किये जा चुके हैं। यह प्रोजेक्ट विदेश मंत्रालय, स्लोवक गणतंत्र सरकार के सहयोग से आयोजित किया। जैसे-जैसे यह पहल अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बढ़ रही है वैसे ही इसका उद्देश्य भी बढ़ता जा रहा है। आपसी शान्ति, सदभावना के साथ ही इस पहल का उद्देश्य ऐतिहासिक स्मृति तथा प्रकृति को संरक्षित करना है।

वृक्षारोपण के साथ ही मेहरानगढ़ दुर्ग में बारिश शुरू हो गई। मारवाड़ में पौधारोपण करते हुए बारिश का शुरू होना एक शुभ संकेत माना जाता है। स्लोवक दूत रोबर्ट मॅक्सिएन एवं डॉ मारेक सोबोला ने पूर्व शासक गज सिंह को 'मेमोरियल मैडल ऑफ ट्री ऑफ पीस' से सम्मानित किया। यह उनके ऐतिहासिक तथा प्राकृतिक संरक्षण के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए प्रदान किया गया। इस मौके पर प्रसन्नपुरी गोस्वामी, रामजी व्यास, मेजर जनरल शेर सिंह, अरुण अग्रवाल, शैलेश माथुर, डॉ महेंद्र सिंह तंवर, घर्माशु बोहरा आदि उपस्थित थे।

- **भारत बना 17वां देश जहां यह वृक्षारोपण किया गया**

पूर्व शासक गज सिंह, हेमलता राज्ये सहित कई विदेशी मेहमानों ने पौधा रोपण कार्यक्रम में भाग लिया।

डिग्गीपुरी लक्खी मेला परवान पर

मालपुरा/डिग्गी, (निसं)। डिग्गीपुरी लक्खी मेले में पिछले तीन दिनों से यात्रियों के आने का क्रम अनवरत जारी है, वहीं एकादशी ग्यारस तक लगातार यूं ही चलता रहेगा। रोज दर्जनों यात्राओं में लोग श्रीजी महाराज के पहुंचकर खुशहाली की कामना कर रहे हैं।

तीन अगस्त को जयपुर ताडकेश्वर मंदिर से रवाना हुई पदयात्रा का ध्वज 7 अगस्त को सांय काल 5 बजे रोडवेज बस स्टैंण्ड से रवाना होगा जो सांयकाल आरती के समय 7 बजे डिग्गी मंदिर में चढाया जाएगा। वही जयपुर से आए हुए पदयात्रियों का सिलसिला चार तारीख से ही शुरू हो जाता है जो सात तारीख तक लगाजार चलता रहजा है। श्रद्धालु सुबह तीन बजे से ही अपने आराध्य देव के दर्शन पाने के लिए कतारों में लग जाते हैं। वहीं धार्मिक नगरी डिग्गीपुरी श्री जी महाराज के जयकारों से गुंजायमान रहा।

प्रशासन अपनी तैयारियां में श्रद्धालुओं की संख्या कोरोना काल खत्म होने के बाद पहली बार लग रहे मेले को लेकर दुगनी समझ रहा था। वहीं इस बार श्रद्धालुओं की संख्या लगभग आधी ही नजर आई। जिला कलेक्टर चिन्मय गोपाल के निदेशों पर एडीएम प्रभाती लाल जाट मेले की व्यवस्थाओं का जायजा ले रहे हैं। वही मालपुरा उपखंड अधिकारी रामकुमार वर्मा, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक राकेश कुमार बैरवा, पुलिस उपाधीक्षक सुशी मान, नायब तहसीलदार चंद्रेशकर टांक, डिग्गी थानाधिकारी सत्यनारायण चोधरी मेले की लगातार मॉनिटिरिंग भी कर जायजा लेते रहे। ग्राम पंचायत की सरंपच हलिमा बानो , सरपंच प्रतिनिधि हकिम भाई, ग्राम विकास अधिकारी सूरेश चौधरी सहित ग्राम पंचायत प्रशासन भी मेले की व्यवस्थाओं को लेकर कंट्रोल रूम में जुटा हुआ है। मेले का समापन सात अगस्त को होगा। वही श्योपुर, सवाई माधोपुर, देवली सहित अन्य पदयात्राएं एकादशी को श्री जी महाराज के दर्शन करेगी। शनिवार को बस्सी गोंविदपुरा, मीनावाला, खेजडिया का रास्ता झोटवाडा सहित अन्य कहीं जगह से आई पदयात्रा डिग्गी श्री जी महाराज के दर्शन किए। टोंक आगर प्रबंधक डॉ एनके मीणा ने बताया कि टोंक डिपो के द्वारा लगाई गई बसों से जहां 2019 में 22 लाख के करीब आय हुई थी। वहीं इस बार पांच लाख के करीब आय हो चुकी है। वहीं जयपुर वैशाली नगर डिपो के चीप मैनेजर अनिल पारीक ने बताया कि 2019 के मुकाबले इस बार रोडवेज की इतनी आय नहीं हुई है। परन्तु अभी तक दो दिन बाकि है।

डिग्गीपुरी लक्खी मेले में पिछले तीन दिनों से यात्रियों के आने का क्रम अनवरत जारी है।

राशिफल रविवार 7 अगस्त, 2022

पंडित अनिल शर्मा

सावन मास, शुक्ल पक्ष, दशमी तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2079, अनुराधा नक्षत्र सांय 4:30 तक, ब्रह्म योग दिन 10:02 तक, तैतिल करण दिन 1:01 तक, चन्द्रमा आज वृश्चिक राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-कर्क, चन्द्रमा-वृश्चिक, मंगल-मेष, बुध-सिंह, गुरू-मीन, शुक्र-कर्क, शनि-मकर, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज रवियोग सम्पूर्ण दिन-रात रहेगा। आज फ्रेंडशिप डे है।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः चर 7:37 से 9:15 तक, लाभ-अमृत 9:15 से 12:33 तक, शुभ 2:11 से 3:47 तक।

राहूकालः 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 5:58, सूर्यास्त 7:07

मेष
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। घर-परिवार के कार्यों के कारण परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। भागदौड़ रहेगी। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। बनते कार्य बिगड़ने का भय बना रहेगा।

वृष
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

मिथुन
अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। स्वास्थ्य में सुधार होगा।

कर्क
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। शुभ कार्य के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

सिंह
घर-गृहस्थी के खर्चों पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है।

कन्या
आर्थिक/वित्तीय मामलों में परिचितों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

तुला
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।

वृश्चिक
अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आज कार्य योजनानुसार सम्पन्न हो सकते हैं। मनःस्थिति ठीक रहेगी। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी।

धनु
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

मकर
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। धन प्राप्त हो सकता है। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

कुंभ
अपने महत्वपूर्ण और आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। व्यक्तिगत खर्चों पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा।

मीन
मनःस्थिति ठीक रहेगी। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त हो सकते हैं। दिनचर्या व्यवस्थित होने लगेगी। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है।